(63)(P)
384
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1220
10/51
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 384

891.431
V197D

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
8- AUG. 1931

॥ बन्दे मातरम् ॥

महात्मा गांधी का सच्चा उपदेश

दुखिया भारत

अथवा

आज़ादी का झंडा

संग्रहकर्त्ता व प्रकाशक—

महाशय प्यारेलाल वैश्य वारा खुर्द निवासी

पता—मौजा पुरायां पो० तिलहर

ज़ि० शाहजहांपुर

उर्दू हिन्दी का सर्वाधिकार सुरक्षित है।

शिवल प्रिंटिङ्ग वर्क्स में छपा

मूल्य -)॥

ईश्वर प्रार्थना

शरण में तुम्हारी हम आये प्रभू जी
गुज़ारिस ये तुम पास लाये प्रभू जी
जो हैं कष्ट हमको मिटा दीजै सारे
तुम्ही से हैं ये लौ लगाये प्रभू जी
ये है हिन्द अब तो गुलामी से जकड़ा
उबारो क्यों देरी लगाये प्रभू जी
पड़ी नाव मझ में लगादो किनारे
बड़ी आस तुझसे लगाये प्रभू जी
ये है लाज भारत की कर में तुम्हारे
खड़े "प्यारे" सर को नवाए प्रभू जी

हमारा चर्खा

चला दो चर्खा हर एक घर में,
तब ये चर्ख तुम हिला सकोगे।
बन्धा तभी तुम सिलसिला सकोगे,
उन्हें कबड्डी खिला सकोगे ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 384
Date 8.12.71
GOVT. OF INDIA

हमारे चर्खे में ऐसा फन है,
जो आज कलकी मशीन गन है।
वह मैनचेष्टर व लंका शायर,
का जीत जिससे किला सकोगे ॥

रुई न भारत की हो रवाना,
बने स्वदेशी का ताना बाना।
इसी तगे से विदेशी बाणिज,
को आप फांसी दिला सकोगे ॥

न पट विदेशी का लो सहारा,
शरीर चाहें रहे उघरा।
बचै बाहत्तर करोर रुपया,
तब अपने बच्चे जिला सकोगे ॥

मिला लो भाई गले लगा के,
स्वदेशी का तुम सबक पढ़ाके।
विदेशी चीज़ों को दो हटाके,
तो चैन बंसी बजा सकोगे ॥

वालिन्टियर बनो

भारत के शेर जागो बदला है अब ज़माना

प्यारे वतन को इस दम आज़ाद है बनाना
मत बुज़दिली को हरगिज़ तुम पास दो फटकने
आख़िर तो दम अदम को होगा कभी रवाना
स्वतन्त्र देवों के अब जल्दी बनो उपासक
निज पूर्वजों का तुम को गर नाम है चलाना
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हो
उनको हराम है अब भारत का आबदाना
दृढ़ सत्य पर रहे धारण करो ऐ अहिंसा
आकर के जोश में तुम हुल्लड़ मती मचाना
माता की कोख नाहक करते हो तुम कलङ्कित
वालन्टियर बनो तुम अब छोड़ दो बहाना
जब देश भर के नेता सब जेल में पड़े हैं
तो फिर तुम्हें भी इससे लाज़िम है जेल जाना
दिल में झिझक न लाओ आगे क़दम बढ़ाओ
है स्वर्ग से भी बढ़कर इस वक्त जेलखाना

"प्रकाश" समय यही है कुछ करलो देश सेवा
दो दिन की ज़िन्दगी है इसका नहीं ठिकाना

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें ।

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें अमल में लाके दिखाना होगा।
जो हम ग़रीबों का है मुसीबत, अब उनसे हमको छुड़ाना होगा॥
नशीली चीजें शराब गांजा, अफ़ीम आदिक जो बुद्धि हरती।
मिटाके इसकी ख़रीद बिक्री, दुकानें सारी उठाना होगा॥
हमारे सिक्के की दर को साहब, घटा बढ़ा कर जो लूट करते।
तो एक शिलिङ्ग चारपेन्स का, कर भाव तुमको दिखाना होगा॥
ज़मीन का भी लगान कम हो, किसान जिससे न दुक्ख पावें।
विभाग इसका हमारी कौंसिल, के हाथ में दिलाना होगा॥
नमक पै कर, जो लगा रखा है, उठालो उसको करो न देरी।
है फ़ौज पल्टन का ख़र्च जो कुछ, उसे भी आधा घटाना होगा॥
बड़े अफ़सरों की तनख़्वा आधी, से और भी कुछ करो कम साहब।
घटी हुई आमद से ही तुमको, ये ख़र्च अपना चलाना होगा॥
स्वदेशी कपड़े की उन्नती के, लिये विदेशी वसन के ऊपर।
लगाओ उसपे कर चौगुना तुम, नियम ये ऐसा बनाना होगा॥
जहाज़ व्यापारिक जो हमारे, चलते समुन्दर में जो ऐ साहब।
लगाया उनपै जो कर है तुमने, वह फ़ौरन तुमको हटाना होगा॥
जिन्हों को हत्या के जुर्म से मिल, चुकी सज़ा उनको छोड़ करके।
जो राजनैतिक हमारे क़ैदी, हैं उनकी बन्दी छुड़ाना होगा॥
जो राजनीतिक के मामले हैं, चले आरहे सदा से साहब।
इसी मुताबिक एक सो चौबिस, दफ़ाय रद्दी कराना होगा॥

विभाग, ख़ुफ़िया पुलिस का तोड़ो, या उसपे अधिकार हो हमारा।
व आत्मरक्षा के हेतु हमको, भी चेम्पियन गन बंधाना होगा॥
लार्ड इरविन से कहें "प्रकाशक,, ये शर्तें गांधी को पूरी करदो।
नहीं तो अपनी प्रजा के क़दमों में शीश तुमको झुकाना होगा॥
हमारे लीडर विदेशों को जो, पठाये जबरन गये हैं फ़ौरन।
स्वराज्य होने का हुक्म उनके, लिये भी तुमको सुनाना होगा॥

भारत की गर्जना

भारत न रहे सकेगा हरगिज़ गुलाम खाना

आज़ाद होगा २ आता है वह ज़माना
खूं खौलने लगा है हिन्दुस्तानियों का
कर देगें ज़ालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना
क़ौमी तिरंगे झंडे पर जां निसार अपनी
हिन्दू मसीह मुसलिम गाते हैं ये तराना
अब भेड़ बकरी बनकर हरगिज़ न हम रहेंगे
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना
परवाह अब किसे है ये जेल औ दमन की
एक खेल हो रहा है फांसी पै झूल जाना
भारत वतन हमारा है भारत के हम हैं बच्चे
माता के वास्ते मंजूर है सर कटाना

भारत सुधार गारी

इन गोरन की करतूत सुनाऊं तोय सुन सजनी ॥ टेक ॥ हरे २ ॥ भारत में ये जिस दम आये खूब दिखाया प्यार । घाल २ कर फिर सब लूटा दई भीतरी मार । लूट गई कनी २ ॥ पहिले एक कंपनी खोली बहुत मचाई धूम । कोरी और जुलाहे यहां के फांस लिये मासूम ॥ पछाड़े सेठ धनी ॥ इन गोरन० अच्छे २ कपड़े यहां पर होते जो तैयार । उसे कंपनी जबरन लेती अरु करती बेज़ार ॥ घरों में दे अगनी ॥ इन गोरन० फांसैं नाखूनों ठोंकी बांध लगाई मार । उगली काट अलग करते थे नित नये अत्याचर ॥ करी अति कटा छनी० ॥ इन गोरन० ॥ करघेचर्खे तोड़ ताड़ कर किया हिन्द बेकार । भारत में या बिध फैलाया यूरुप का व्यौपार ॥ बिगाड़ी बात बनी ॥ इन गोरन० ॥ अबलाओं के

अंग दीखते वस्त्र पहिन बारीक। मालामाल विलायत हो गई भारत मांगे भीख ॥ सकल सम्पति छीनी ॥ इन० वस्त्र विदेशी अब मति पहिनो रखो देश की लाज। त्यागो फेंको आग लगादो तब ही होय स्वराज ॥ सुनो भारत भगनी ॥ इन गोरन की करतूत

स्वदेशी गान

(इस कविता पर श्री बेनीमाधव खन्ना ने ५१) पुरस्कार दिया था)

जियें तो स्वदेशी बदन पर वसन हो,
मरें अगर तो स्वदेशी कफ़न हो ॥ टेक ॥
पराया सहारा है अपमान होना,
जरूरी है निज शान का ध्यान होना
है वाजिब स्वदेशी पै कुर्बान होना,
इसी से है सम्भव समुत्थान होना
लगन में स्वदेशी की हर मर्दोज़न हो। मरें भी अगर० ॥ १ ॥
निछावर स्वदेशी पै कर मालोज़र दो,
स्वदेशी से भारत का भंडार भरदो।
रहें चित्र से- वह चकाचौंध करदो,
दिखा पूर्वजों के लहू का असर दो।
स्वदेशी हो सजधज स्वदेशी चलन हो ॥ मरें भी अगर० ॥२॥

चलो इस तरह अपना चर्खा चला दो
भरो सूत की ढेरियां तुम लगादो ।
बुनो इतने कपड़े मिलों को झुका दो,
जमा दो स्वदेशी का सिक्का जमा दो ।
स्वदेशी हो गुल औ स्वदेशी चमन हो ॥ मरें भी अगर० ॥३॥
न अतलस न मखमल की हो चाह तुमको ।
कपट-सिन्धु की मिल गई थाह तुमको
न अब कर सकेंगे ये गुमराह तुमको,
किसी की रही कुछ न परवाह तुमको ।
फ़िदाये वतन अपना तन प्राण धन हो ॥ मरें भी अगर० ॥४॥
उठो कर्मवीरो तुम्हें कौन भय है,
स्वदेशी का संग्राम भी शांतिमय है ।
प्रथा पाप की पाप में आप लय है,
विजय है, विजय है, तुम्हारी विजय है ।
स्वदेशी हो पूजन स्वदेशी भजन हो । मरें अगर तो० ॥ ५ ॥
समर स्वत्व का वीर वर ठान दो तुम,
किसी के प्रलोभन में मत कान दो तुम ।
खुशी से स्वदेशी पै दे जान दो तुम,
बने जिस तरह मां को सम्मान दो तुम ।
स्वदेशी हो जीवन स्वदेशी मरन हो । मरें भी अगर तो० ॥ ६ ॥
बनो कर्मयोगी न तुम कर्म छोड़ो,
गुलामी की जञ्जीर चर्खे से तोड़ो ।
मुसीबत उठाओ मगर मुंह न मोड़ो,
तपोबल से अन्याय का गर्व तोड़ो ।
स्वदेशी हो पोषण स्वदेशी मरण हो । मरें भी अगर तो० ॥ ७ ॥

तुम्हीं तो स्वदेशी के हो आज भ्राता,
तुम्हीं देश के भाग्य के हो विधाता।
तुम्हीं पर है सौ जां से कुर्बान माता,
तुम्हें फिर न क्यों ध्येय का ध्यान आता।
जो साधन स्वदेशी हो संकट शमन हो। मरें भी अगर तो ॥८॥

करो प्रण कि अज़ाद होकर रहेंगे,
जहां में कि बरबाद होकर रहेंगे।
सितमगर हो या शाद होकर रहेंगे,
कि हम शाहो आबाद होकर रहेंगे।
स्वदेशी हो 'अख्तर' स्वदेशी कथन हो। मरें भी अगर तो० ॥९॥

—श्री स्वामी नारायणानंद जी 'अख्तर'

भारत की पुकार

है देश प्यारा हमारा भारत, इसी पै तन मन को वार देंगें। रहेंगे या तो स्वतन्त्र हो कर, या कर निछावर हम प्राण देंगे॥ हो चाहें जो कुछ भी हाल तन का, गुलाम बनकर न पर रहेंगे। वजह क्या जो कि हक़ हमारे, इसी तरह से दबे रहेंगे॥ हमारे धन से हमारे घर पर, जो गैर आके मज़े करेंगे। न होगा ऐसा

कभी भी हरगिज़, कि इस कदर के हम दुख सहेंगे ॥ हकूक अपने जो जब मांगते हैं, तो डर दिखाते मशीन गन का ॥ ये याद रक्खें वह अपने दिल में, न इससे हरगिज़ हम डर सकेंगे ॥ चलायेंगे गर मशीन गन वह, इधर चलेगा हमारा चर्खा । इसी एक चर्खे से देखो नशा हम उनका उतार देंगे ॥ है उनके हक़में यही भलाई, हकूक सारे हमारे देदें । कहें ये बाबू फिर इस जहां के, हम सारे झगड़े कर पार देंगे ॥

गज़ल दादरा (चर्खा)

टेक—गांधी बाबा ने भारत जगाय दिया है ।
हमें चरखे का मंतर बताय दिया है ॥

शैर—जब से घर-घर में ये चरखे का चलाना छूटा ।
बस उसी रोज से भारत का नसीबा फूटा ।
आके परदेशियों ने खूब खसोटा लूटा ।
धर्म छूटा सभी इन्सान का पौरुष टूटा ।
आंखों से पट्टी हटाकर गुलामी की,
मारग पुराना दिखाय दिया है । गांधी ॥ १ ॥

शेर—कौनसा घर था जहां चर्खे नहीं चलते थे।
लाखों मन सूत इन्हीं चरखों से निकलते थे
महीन मोटे कपड़े हर तरह के बनते थे।
शुद्ध मज़बूत थे सुख से उन्हें पहिनते थे।
विलायत से आके राज जमा के,
हाय गोरोंने वह सुख नसाय दिया है। गांधी०

शेर—ब्याह शादी में था दहेज में चरखे का चलन।
नारियां हिन्दू मुसलमान समझती थीं सगुन।
नेम से नित्य वे चरखे को चलाती थीं पुन।
सुख से भरपूर रहो उससे निकलती थी धुन।
धर्म से हमने कैसे विमुख हो,
पापों में मन को लगाय दिया है। गांधी० ॥३॥

शेर—विदेशी सारियां क्रेप वो अद्ध मल मल।
हिन्द के लोग गिरे देख उन्हें मुंह के बल।
नारियां लाज से घूंघट न लो उठाती हैं।
पहन के उन को साफ नगी नजर आती हैं।
डूब मरो तुम्हें लाज न आती,
पैसा वो इज्जत गंवाय दिया है। गांधी० ॥४॥

शेर—कुछ अभी ग़ौर करो हिन्दू औ मुसलमानो,
तलाक दे दो इन्हें, अपनी दशा पहिचानो।
चलाओ चर्खा तजो शौक वह दिन आयेगा
स्वराज्य दौड़ कर क़दमों में सिर नवायेगा
सूत के धागे में सारी है ताकत
'माधो" ने तुमको सुनाय दिया है ॥ गांधी बाबा० ५ ॥

राष्ट्रपति जवाहरलाल

हुए पैदा भारत में गांधी जवाहर
करी मात भारत की कुन्धा उजागर
जिन्हों ने ग़ुलामी की ज़ंजीर तोड़ी
बिट्रिश कूट नीती की हंडी है फोड़ी
लिया नीति अहिंसा का कर में दुधारा
पड़े कूद संग्राम के बीच धारा
ग़ुलामी से भारत जो जकड़ा हुआ था
गवर्मेन्ट के लोभ में जो फंसा था
उन्हें मंत्र चर्खे का ऐसा बताया
उदू के दिलों को है जिसने हिलाया
किया दूध का दूध पानी का पानी
पड़ी जेल में मात भारत भवानी
उसे दिलसे अज़ाद करने की ठानी
पड़े जिसमें आगे न सख़्ता उठानी
जो किसानों पे करते ज़िमीदार सख़्ती
बिट्रिश की हैं जिन पै कृपाणें चमकती

उन्ही के लिए कर में ली नीति तख्ती
जिस देख दिलमें है अग्नी धधकती
राज नितिक के पीछे मिटा अपनी हस्ती
पड़े जेल में दुख भोगें हैं सख्ती
अरे हिन्दू मुसलिम क्यों अब सो रहे हों
बढ़ाओ क़दम देर क्यों कर रहे हो
करो मुल्क आज़ाद चर्खा चलाकर
उठो 'प्यारे' तुमभी हशर दो दिखाकर

खुदया कैसी मुसीबतों में ये हिंदवाले पड़े हुये हैं। कदम २ पर हमारी ख़ातिर सितम के छाले पड़े हुए हैं॥ जो आए महिमा हमारे बन कर वह जुलम करने लगे हमीं पर, ग़ज़ब तो ये है मकां से बाहर मकांन वाले पड़े हुए हैं। सरों पै दुशमन खड़े हुए हैं गलों पै खंज़र चला रहे हैं। दिलों में नस्तर चुभे हुए हैं, ज़िगर में छाले पड़े हुए हैं। हज़ारों बच्चों

से बाप बिछड़े, वह तेरा किस्मत के होके टुकड़े, सुहागलों के सुहाग उजड़े, घरों में ताले पड़े हुए हैं। हवा जमाने की बिगड़ी नेयर, कि .जुल्म होने लगे सरासर, सुनायें प्यारे फरियाद किसको जवां पें छाले पड़े हुए हैं॥

चर्खा से स्वराज

हमें ये स्वराज्य दिलाएगा चर्खा
खिलाफत का झगड़ा मिटाएगा चर्खा
ये घूँ घूँ की धुर्पद सुनाएगा चर्खा
मेरे हौसले सब बढ़ाएगा चर्खा
अगर हिन्द अपना चलायेगा चर्खा
तो पल में हशर कर दिखाएगा चर्खा
गन मशीनो के छक्के छुटाएगा चर्खा
उदूँ के ज़िगर को जलाएगा चर्खा
देशी मलमल व मखमल बनाएगा चर्खा
दग़ाबज़ों को यहां से भगाएगा चर्खा
स्वदेशो की जड़ को जमाएगा चर्खा

विदेशी तिजारत को खाएगा चर्खा
पूरी शर्तें हमारी कराएगा चर्खा
देश आजाद करके दिखाएगा चर्खा
गुलामी का फंदा छुड़ाएगा चर्खा
अजी जालिमों को रुलाएगा चर्खा
जो 'प्यारे' भी अपना चलाएगा चर्खा
तो दुश्मन को नीचा दिखाएगा चर्खा

अवश्य पढ़िए अवश्य पढ़िए अवश्य पढ़िए

लीजिये

रोज़गार का रोज़गार

❋ भारत का सुधार ❋

नोट—यदि आपको स्वतंत्र भारत से प्रेम है और जीवन शुफल बनाना चाहते हैं या लाभ उठाना चाहते हैं तो आप हमारे यहां के ट्रैक्ट मंगा कर लाभ उठावें और भारत स्वतंत्र बनावें।

कांग्रेस बिगुल —)॥ उपदेशमाला हिन्दी उर्दू —)॥
कलयुग का फैशन स्त्री सुधार —)॥
देश सुधार —)॥ सुराज्य का झंडा
स्वतंत्र भारत स्वदेशी भंडार —)॥ चर्खे की करामात —)॥
विधवा विलाप —)॥ भारती भारत —)॥
क्रांति का सिंहनाद महात्मा गांधी का अल्टीमेंट